

# प्रतापगढ़ का आदमखोर

सैयद मुस्तफा सिराज

पहले मालूम होता तो इस बुड़े के चक्कर में कभी न पड़ता। इतने सारे बूढ़े लोगों को देखा, गर्मियों में नाती का हाथ पकड़ पार्क में जाकर बैठे रहते हैं और सर्दियों में घर के कोने में शॉल ओढ़कर अखबार पढ़ते हैं। हाँ, दो-चार बुड़े नेता बन जाते हैं और देश चलाते हैं। अखबार के लिए खबरें इकट्ठी करने के सिलसिले में उनसे थोड़ी-बहुत जान-पहचान भी हुई है। परन्तु कोई भी इस बुड़े की तरह पहाड़-जंगलों में जंगली घोड़े की तरह भागा-दौड़ी नहीं करता फिरता - वो भी सिर्फ अपनी दो टांगों के बल पर। या फिर किसी तितली या पंछी के पीछे बच्चों जैसे अचम्भित होकर नहीं भागता।

इस बुड़े की तो करतूतें ही अद्भुत हैं। वरना किसकी हिम्मत होगी कि जनवरी की इस कँपकँपाने वाली ठण्ड में प्रतापगढ़ के जंगल में कैमरा लेकर देर रात तक बेफिक्र



घूमे? वो भी उस जंगल में जहाँ हाल में एक आदमखोर बाघ का दबदबा चल रहा हो।

जंगल में रात को कैमरे की बात सुनकर अगर कोई यह समझे कि ज़रूर फ्लैश बल्ब की सहायता से जानवरों की तस्वीरें खींची जाती हैं, तो वह बहुत बड़ी गलती होगी। यह कैमरा भी अजीबो-गरीब है।

भुतहा कहने में भी मुझे कोई दिक्कत नहीं। क्योंकि उसमें फ्लैश बल्ब की कोई ज़रूरत नहीं पड़ती। फिर भी अँधेरे में लेंस के सामने बीस-पच्चीस मीटर की दूरी तक 180 डिग्री के भीतर जो कुछ भी हो, उस सबकी तस्वीर आ जाती है। शटर दबाने के लिए किसी के बैठे रहने की ज़रूरत नहीं। उसमें इलेक्ट्रॉनिक इन्तज़ाम इतना सूक्ष्म और संवेदनशील है कि लेंस के सामने बताई दूरी के अन्दर ज़मीन पर ज़रा-सा कम्पन ही काफी है। जब भी कोई जानवर ज़मीन पर चलता है तो कुछ-न-कुछ कम्पन

ज़रूर पैदा होता है। उसी से शटर क्लिक हो जाता है।

प्रतापगढ़ जंगल के बंगले में कैमरे का जाल बिछाकर जब वे रात दस बजे वापस आए, तब मैं फायर-प्लेस के सामने आराम-कुर्सी पर बैठकर कड़क कॉफी की चुस्कियाँ ले रहा था और दूसरे दिन सुबह वहाँ से भाग निकलने की तरकीब सोच रहा था। कितनी ठण्ड है, बाप रे! बिहार की ठण्ड मशहूर है, मालूम था। लेकिन प्रतापगढ़ का इलाका उत्तरी ध्रुव का छोटा भाई होगा, ये पता नहीं था।

“हेलो डार्लिंग!” उन्होंने हमेशा की तरह अभिवादन कर टोपी और ओवरकोट उतारा और मेरे पास बैठकर ज़रा हँसकर कहा, “जयन्त, मुझसे नाराज़ हो क्या?”

उन्होंने एक हाथ मेरे कंधे पर रखा और दूसरे में कॉफी का मग पकड़कर गम्भीर आवाज़ में कहा, “डार्लिंग! उम्मीद है कि कल सुबह तक मैं तुम्हें एक ऐसी कमाल की तस्वीर दिखा पाऊँगा जिसे देखकर तुम्हारी आँखें खुली-की-खुली रह जाएँगी। इसलिए कम-से-कम एक और दिन धीरज से इन्तज़ार करो। और जयन्त, ऐसा भी हो सकता है कि इस बार तुम प्रतापगढ़ से अपने दैनिक ‘सत्यसेवक’ के लिए एक रोमांचक खबर भी साथ ले जाओ।”

उनकी खुशनुमा बातों से ज़रा भी न पिघलकर मैंने कहा, “और किसकी तस्वीर दिखाएँगे? पिछली रात तो

आपके कैमरे ने झरने से पानी पीने आए हिरणों के झुण्ड की तस्वीर खींची थी। कल ज़्यादा-से-ज़्यादा एक दुबला-सा बाघ दिख जाएगा!”

“सही कहा डार्लिंग!” बुड़ढा सफेद दाढ़ी पकड़कर हँसा। फिर स्वभाव के मुताबिक वही हाथ अपने गंजे सिर पर फहराया और कुछ नीचे फेंक दिया। देखा, लाल रंग का एक कीड़ा। कई बार इस गंजे सिर पर मकड़ी का जाल या चिड़िया की बीट भी देखी है। बूढ़े ने कीड़े की हलचल पर नज़र रखते हुए कहा, “बाघ की ही तस्वीर दिखाऊँगा। और वो भी कोई ऐसा-वैसा बाघ नहीं, वही बदनाम आदमखोर बाघ जिसे मारने के लिए सरकार ने इनाम का ऐलान किया है।”

मैंने चिढ़कर कहा, “अच्छा चलिए, मान लिया कि उस आदमखोर बाघ की तस्वीर आपके कैमरे में आ जाएगी। लेकिन आपने उन शिकारी लोगों को क्यों नहीं बताया? वे लोग बाघ को मारने के लिए परेशान हो रहे हैं। आपके सामने ही तो वे दोनों आज शाम को निकल गए। कहीं एक भैंस का बछड़ा बाँधकर पेड़ पर मचान बनाकर सारी रात बैठे रहेंगे। खामखाह ठण्ड में बेहद तकलीफ होगी।”

उन्होंने मेरी बात का जवाब देने के लिए मुँह खोला ही था कि चौकीदार ने दरवाज़े से झाँककर थोड़ा खाँसकर कहा, “हुज़ूर कर्नल साब! खाना तैयार

है। हुकुम होगा तो अभी लावेगा।”

“ज़रूरा।” कहकर हुज़ूर कर्नल साब यानी मेरे बूढ़े दोस्त कर्नल नीलाद्रि सरकार उर्फ ‘धुरन्धर बुडूढे’ ने स्वभाव मुताबिक छाती पर क्रॉस बनाया और एक सच्चे आस्थावान की तरह खाना खाने के लिए तैयार हो गया।

बंगला एकदम जंगल के बीचों-बीच था। इसीलिए सावधानी बरतने के लिए पूरे बरामदे में जंगला लगा हुआ था और इतनी ठण्ड की वजह से सारा जंगला ढका हुआ था। बरामदे के एक ओर किचन था। चौकीदार किचन के सामने खटिया बिछाकर सोता था। आजकल उस आदमखोर बाघ के आतंक की वजह से और सावधानी के लिए चौकीदार एक टॉर्च एवं सोटा पास रखता है। बूढ़े कर्नल आदमखोर के डर को नज़रअन्दाज़ कर देर रात तक जंगल में घूमते और सही सलामत लौट भी आते। चौकीदार बरामदे की ग्रिल का एक छोटा-सा हिस्सा खोलकर हुज़ूर कर्नल साब को अन्दर आने देता और फिर तुरन्त उस दरवाज़े को बन्द कर ताला लगाकर शक की नज़र से देखता रहता। मुझे लगता है, उसकी नज़र में एक बेचैनी रहती है कि वह इन्सान देख रहा है या भूत। दिन-ब-दिन कर्नल पर उसकी श्रद्धा लगातार बढ़ती चली थी।

चटनी लगी मोटी रोटियों के साथ जंगली मुर्गे के मांस से जमकर पेट पूजा की गई। खाते हुए कर्नल ने मेरी उस बात का जवाब दिया। “सही कहा जयन्त! मि. सेन और मि. दत्त को मुझे बताना चाहिए था, आप लोग झरने की घाटी में जाल न बिछाकर थोड़ा ऊपर की तरफ आकर बिछाइए। क्योंकि मुझे लगता है कि बाघ वहीं



टीले के ऊपर एक गुफा में रहता है। मैंने उसके पैरों के निशान भी ध्यान से देखे हैं। जंगल-विद्या में मुझे भी थोड़ी-बहुत जानकारी तो है ही।”

“तो कहा क्यों नहीं?”

कर्नल हँसे। “बिन पूछे खुद से चलकर कहना सही नहीं लगा। और तुमने ज़रूर ध्यान दिया ही होगा, खासकर मि. दत्त, कैसे बदतमीज़ किस्म के आदमी हैं। यहाँ आते ही हमें देखकर कैसे नाराज़ हो रहे थे। मि. सेन ने भी कैसे हमें सुनाकर कहा, ‘दो-दो आदमियों का चारा रहते खामखाह भैंस के बछड़े पर पैसे खर्च करने की क्या ज़रूरत है?’ यह बात मुझे चुभ गई, जयन्ता!”

उनका दुःख देखकर मैंने हलके मिज़ाज में कहा, “अहा! वो लोग कर्नल नीलाद्रि सरकार नामक मशहूर ‘धुरन्धर बुड़ढे’ को नहीं न जानते! अगर जानते होते, तो ज़रूर तमीज़ से बात करते। यह सोचिए, जिस जंगल में आदमखोर बाघ घूमता हो, वहाँ अगर कोई शौक फरमाते घूमने आए, वो चारा नहीं तो और क्या बनेगा?”

परन्तु कर्नल हँसे नहीं। गम्भीरता से ग्लास का बर्फीला ठण्डा पानी पूरा निगल गए।

\*\*\*

रात के आखिरी पहर में कुछ शोर की आवाज़ से नींद टूटी। जागकर कुछ सेकण्ड तक मैं भोंदू की तरह

ताकता रहा। लालटेन की बत्ती बढ़ाकर कर्नल व्याकुल होकर पुकार रहे थे, “जयन्ता! जयन्ता!” बाहर चौकीदार एक अनजानी भाषा में चिल्लाए जा रहा था। और फिर कोई ज़ोर-ज़ोर-से रोने लगा।

कम्बल छोड़कर बाहर निकलना आसान बात नहीं। पर ऐसी परिस्थितियों में सहज-ज्ञान काम करता है। मैं एकदम से उठ पड़ा। फिर देखा, कर्नल हाथ में लालटेन लिए आगे बढ़कर दरवाज़ा खोल रहे थे। मैं भी उनके पीछे-पीछे भागा। बरामदे में निकलते ही एक भयंकर नज़ारा दिखाई दिया। ज़मीन पर पैर फैलाए बैठे हुए थे वही शिकारी मि. दत्त और दोनों हाथों से मुँह ढँककर बच्चों जैसे रो रहे थे। उनके कपड़े ताज़ा खून से लथपथ थे। पास में दो राइफल पड़ी हुई थीं। और उनके सामने बेचारा चौकीदार खड़े-खड़े उलझी हुई आवाज़ में लगातार कुछ अर्नगल प्रलाप किए जा रहा था, जो समझ नहीं आ रहा था।

कर्नल ने मि. दत्त के कंधे पर हाथ रख उन्हें हिलाकर कहा, “शान्त हो जाइए मि. दत्त। क्या हुआ वो बताइए।” कर्नल की बात सुनकर मि. दत्त थोड़े शान्त हुए। फिर ज़ोर-से नाक झाड़ कर कहा, “ओ हो हो हो! मैं अब क्या करूँ? क्या करूँ मैं अब? मेरे जीवनभर का साथी मेरा जिगरी दोस्त अमल... वो!”

कर्नल ने कहा, “प्लीज़ मि. दत्त!

शान्त हो जाइए, शान्त हो जाइए।  
हुआ क्या, वो बताइए।”

हेकड़ी के साथ मि. दत्त ने टेढ़े  
मुँह से कहा, “क्या हुआ समझ नहीं  
पाए, जनाब? अमल को बाघ ने मार  
डाला। ओ हो हो! उसकी पत्नी और  
बाल-बच्चों को मैं अपनी शक्ल कैसे  
दिखा पाऊँगा?”

अब तक यही अन्दाज़ा लगाया था।  
कर्नल उनके कँधे से हाथ हटाकर  
उठ खड़े हुए। फिर कहा, “सर्वनाश!  
मि. सेन को आदमखोर बाघ ने मार  
डाला! पर यह सब हुआ कैसे मि.  
दत्त? आप दोनों क्या एक ही मचान  
पर थे?”

दत्त साहब रुमाल से आँख-नाक  
पोंछकर बोले, “एक ही मचान पर थे।  
पर वह बाघ कब चुपके से पेड़ पर  
चढ़ आया, पता नहीं चला। मेरी हल्की  
नींद-सी लग गई थी। अचानक अमल  
की चीख से मेरी आँख खुली। टॉर्च  
जलाते ही देखा, उफ! भयानक दृश्य  
था। बाघ अमल की गर्दन मुँह में  
दबोचकर कूद गया।”

कर्नल ने कहा, “आपने ज़रूर  
गोली नहीं चलाई? उसकी राइफल  
भी तो साथ लाए हैं।”

दत्त साहब लम्बी साँस लेकर बोले,  
“मैं सदमे में था। तभी टॉर्च और  
राइफल नीचे गिर गए। उफ! ओ हो  
हो हो! अमल!”

“फिर? फिर क्या हुआ?” मैंने  
घुटती साँस के साथ पूछा।

मि. दत्त ने कहा, “फिर मैं कैसे  
भागकर आया हूँ, वो बस मैं ही  
जानता हूँ। यह देखिए कितनी जगह  
खरोंचें लगी हैं। और यह देखिए,  
कितना खून। अमल का खून। ओ हो  
हो हो!”

कर्नल थोड़ा सोचकर बोले, “बहुत  
देर हो चुकी है। अब तक बाघ अपना  
शिकार लेकर चला गया होगा। सुबह  
तक इन्तज़ार करने के अलावा कोई  
उपाय नहीं है...”

बाकी रात और सो नहीं पाए।  
बगल के कमरे से दत्त साहब के  
शोक-प्रकट करने की फुसफुसाहट  
लगातार सुनाई दे रही थी। कर्नल  
और मैं फायरप्लेस के सामने बैठे रहे।  
बूढ़ा कर्नल एकदम चुपचाप था। कई  
सवाल पूछने पर भी कोई जवाब नहीं  
मिला। आदतन दाढ़ी या गंजे सिर पर  
हाथ फेरते, कभी आँखें मूँदकर छाती  
पर क्रॉस बनाते।

जंगल और पहाड़ को घना कुहासा  
घेरे हुए था। धूप बढ़ने पर कुहासा  
कम हो गया। तब कर्नल मुझे साथ  
लेकर निकले। दत्त साहब को देखा,  
वे धूप में लॉन में बैठे हुए थे। हाथ में  
राइफल थी। हिंसक शक्ल। लाल  
आँखें। कर्नल ने बुलाया, “आइए, मि.  
दत्त। देखें, आपके साथी की लाश  
मिलती है या नहीं।”

दत्त साहब उठे। “उस शैतान को  
खतम किए बिना मैं कलकत्ता लौटने  
वाला नहीं। यही मेरी प्रतिज्ञा है।”

कर्नल ने चलते हुए कहा, “हमें सबसे पहले मचान की ओर ही चलना चाहिए।”

मि. दत्त ने सिर्फ “हूँ” कहा।

बंगले से झाड़ियों भरी ढलान से उतरकर हम लोग एक छोटी-सी नदी के तट पर पहुँचे, जो थोड़ी ही दूरी पर झरने से बहकर आती है। पत्थर के ऊपर से साफ पानी का बहाव चला आ रहा था। थोड़ी देर उसके किनारे-किनारे चलने के बाद मि. दत्त ने कहा, “वो रहा, वहाँ।”

चारों तरफ घने पेड़ पौधे थे और बीच में थोड़ी-सी खाली घास वाली ज़मीन थी। एक भैंस का बछड़ा आराम-से घास खा रहा था। मैंने सोचा, यही चारा होगा। उस जगह पर पहुँचकर हम दंग रह गए। मचान

के ठीक नीचे एक कटी-फटी लाश पड़ी थी। फिर मि. दत्त जोर-से चिल्लाए और दौड़कर लाश के पास घुटनों के बल बैठ गए और रात की तरह जोरों-से रोने लगे।

कर्नल और मैं आगे बढ़े। शिकारी मि. सेन के गले पर गहरे चोट के निशान थे और छाती का ऊपरी हिस्सा नुकीले नाखून की चोट से बुरी तरह ज़ख्मी था। पूरा पुलओवर फटा हुआ था। हर जगह जमे हुए काले खून के निशान थे। कर्नल ने सिर उठाकर ऊपर मचान की तरफ देखा। फिर अचानक पेड़ पर चढ़ने लगे। पेड़ के तने और टहनियों पर खून के निशान दिख रहे थे।

थोड़ी देर बाद कर्नल ने मचान से उतरकर कहा, “आपने सही कहा मि.



दत्त। बाघ ने अचानक मचान के ऊपर ही उनपर हमला किया। उन्हें बचाव का वक्त नहीं मिला। तो ये लाश...”

दत्त साहब ने शान्त होकर कहा, “चौकीदार को कुछ लोगों को साथ लाने को कह दिया है। जीप में कलकत्ता ले जाऊँगा। पर पता नहीं, अमल की पत्नी के सामने कैसे खड़ा हो पाऊँगा। उफ!”

कर्नल थोड़ी देर कुछ सोचते हुए मचान की तरफ ताकते रहे। फिर अचानक घूमकर बोले, “देखिए मि. दत्त, मुझे लगता है कि आपके साथी मि. सेन को जिस बाघ ने मार डाला, वह आदमखोर नहीं था।”

मि. दत्त ने भौंहे चढ़ाकर कहा, “आप क्या शिकारी हैं? कैसे पता कि वह आदमखोर बाघ नहीं था? आदमखोर बाघ के अलावा कोई बाघ इस तरह चुपके-से पेड़ पर चढ़कर शिकारी पर हमला नहीं करता।”

कर्नल ने कहा, “बिलकुल ठीक। लेकिन इस जंगल में और बाघ भी तो हो सकते हैं।”

दत्त साहब ने भड़ककर कहा, “जिस बात की जानकारी न हो, उस पर ज़्यादा बकवास मत कीजिए।”

कर्नल डाँट खाए सहमा हुआ चेहरा लेकर वहाँ से हट गए। “चलो जयन्त, लाश तो मिल गई। अब हम अपने काम पर लग जाते हैं।”

झरने के किनारे आकर मैंने कहा, “कितना बदतमीज़ आदमी है! ज़िद्दी।

एक हमबगा!”

कर्नल ने हँसकर कहा, “शिकारियों को थोड़ा गुस्सा आना स्वाभाविक है। जाने दो जयन्त! तुम बंगले में लौटकर विश्राम करो। जानता हूँ, इस बुड़ढे के पीछे भाग-दौड़ करना तुम्हें पसन्द नहीं।”

“हाँ, सो तो है। पर आप कहाँ जा रहे हैं?”

“फिलहाल कैमरा ले आता हूँ।” कहकर कर्नल तेज़ी-से आगे बढ़ गए। मैं बंगले में लौट आया।

कर्नल दोपहर तक लौटे। फिर खा-पीकर फिल्म डेवलप करने बाथरूम में चले गए। वही उनका डार्करूम था। पिछली रात नींद पूरी नहीं हुई थी। इसलिए मैं कम्बल ओढ़कर सो गया। अचानक कर्नल के पुकारने से नींद टूटी। “जयन्त! जयन्त! सब सामान जल्दी समेट लो। हम लोग अभी रवाना होंगे। जीप आ गई है।”

मैंने कहा, “ये क्या! जंगल की प्यास इतनी जल्दी मिट गई? या फिर आदमखोर बाघ के डर से? और जीप कहाँ से मिली? हम लोग ऐसे गलत वक्त में किस जहन्नुम में जाएँगे?”

धुरन्धर बुड़ढे ने रहस्मयी हँसी हँसते हुए कहा, “वेट, वेट डार्लिंग। फिलहाल सारे सवालों के जवाब में मेरी रात की उपज तुम्हें भेंट देना चाहता हूँ। ये लो।”



हाथ बढ़ाने पर जो मिला, वो एक छोटा-सा फोटोग्राफ था। किन्तु देखते ही मैं चौंक उठा। ये क्या! देखता हूँ कि मि. दत्त घुटने मोड़कर पत्थर की दरार में हाथ डालकर कुछ कर रहे हैं। मैंने हैरान होकर कहा, “इसका मतलब? कल रात तो वो दोनों मचान पर थे - मतलब मि. दत्त और मि. सेन! लेकिन यहाँ तो दिख रहा है कि मि. दत्त अकेले कुछ कर रहे हैं।”

कर्नल फिर से अजीब ढंग से हँसे। “जल्दी-से तैयार हो जाओ। तुम्हें जो दिखाने का वादा किया था, सो दिखा दिया। बाकी प्रतापगढ़ टाउनशिप में जाकर दिखाऊँगा।”

“पर आपने तो आदमखोर बाघ दिखाने का वादा किया था।”

“वही तो दिखाया।” कहकर बूढ़े जासूस साहब खुद ही मेरी कम्बल-बेडिंग समेटने लगे। मैं हक्का-बक्का रह गया। थोड़ी देर बाद जीप में

चढ़ते वक्त कर्नल ने कहा, “दरअसल, जिस बूढ़े और दुर्बल बाघ ने इस इलाके में पाँच लोगों को मारकर खाया था, वो अपनी पहाड़ी गुफा में स्वाभाविक मौत से मरा पड़ा है। कल उसे खोज आया हूँ। ऐसे भी कभी किसी शिकारी की गोली खाने की वजह से बाघ की हालत काफी शोचनीय हो चुकी थी। अच्छा चलो, अब जीप पर चढ़ जाओ वत्स, यथास्थान पहुँचकर सब समझ जाओगे।”

प्रतापगढ़ टाउनशिप पहुँचने में तकरीबन शाम हो गई। हैरान होकर देखता हूँ कि जीप थाने में घुस रही है। जी घबराने लगा। तो क्या मि. सेन बाघ के हाथों नहीं मरे? क्या मामूली कत्ल का मामला है?

हूँ, ठीक वही मसला निकला। मि. दत्त लाल आँखें लिए हिंसक शक्ल बनाए बैठे हुए थे। हाथों में हथकड़ी थी। टेबल को चारों ओर से घेरे हुए पुलिस के कुछ अफसर थे। हमें देखकर एक पुलिस अफसर चिल्ला उठा, “हेलो कर्नल!”

कर्नल ने अपने कोट की पॉकेट से तस्वीरों का एक गट्टा आगे बढ़ाकर कहा, “ये मेरे अद्भुत कैमरे की रात की फसल है, मि. शर्मा। एक तस्वीर में मि. दत्त बाघ के दो नाखून छिपाते हुए दिखाई देंगे। फिल्म पर समय भी सांकेतिक रूप में छप जाता है। रात के दो बजकर तीस मिनट। यह देखिए।”



मि. शर्मा ने हँसकर कहा, “आपके निर्देशानुसार सही जगह से दो मर्डर-वेपन जब्त किए गए हैं। डेडबॉडी मॉर्ग में भेजी जा चुकी है। रिपोर्ट बस आती ही होगी।” कहकर उन्होंने ड्रॉअर से कागज़ में मुड़े रखे बाघ के पंजे के नाखून जैसे दो खतरनाक अस्त्र निकाले। उनपर खून के निशान काले पड़ गए थे।

मि. दत्त चट्टान की तरह सिर झुकाकर बैठे थे।

\*\*\*

देर रात को सर्किट हाउस के एक कमरे में कर्नल से आमना-सामना हुआ। पूछा, “आखिर दत्त साहब ने अपने दोस्त का कत्ल क्यों किया?”

कर्नल ने जवाब दिया, “कलकत्ता के मशहूर ‘होज़री दत्त एंड सेन’ का नाम नहीं सुना जयन्त? अरे, वही बाघ-मार्का चड़डी-बनियान आदि वाले। जितना समझ में आया, उससे लगता है कि दत्त साहब भीतर ही

भीतर अपने पार्टनर मित्र सेन साहब को धोखा देकर अकेले मालिक बनने का षड़यंत्र रच रहे थे। पिछली रात मैंने उन्हें दबी आवाज़ में कुछ बहस करते हुए सुन लिया था। खैर, उस षड़यंत्र का ही नतीजा था, यह हत्याकाण्ड। ज़रा सोच के देखो जयन्त, मि. दत्त ने क्या कमाल की तरकीब निकाली थी! आदमखोर बाघ का शिकार करने के सिलसिले में किसी आदमी का मारा जाना कितना स्वाभाविक लगता। सिर्फ़ इस बूढ़े प्रकृति-प्रेमी और उसके अद्भुत कैमरे ने इसमें विघ्न डाल दिया। पर डार्लिंग जयन्त, मैं प्रतिज्ञा करता हूँ कि अगर तुम इस बूढ़े को बेरहमी से छोड़ न जाओ, तो मैं तुम्हें कुछ ही दिनों में सचमुच का बाघ ज़रूर दिखाऊँगा।”

दाढ़ी वाले गंजे ‘धुरन्धर बुड्ढे’ कर्नल नीलाद्रि सरकार ने एक सिद्ध पादरी की तरह अपने चौड़े सीने पर एक क्रॉस बनाया। फिर अस्पष्ट आवाज़ में कहा, “आमीना! आमीना!”

**सैयद मुस्तफा सिराज़ (1930-2012):** बंगाली भाषा के विख्यात साहित्यकार थे। इनके द्वारा रचित उपन्यास *अलीक मानुष* के लिए उन्हें सन् 1994 में ‘साहित्य अकादमी पुरस्कार’ से सम्मानित किया गया। उन्होंने लगभग 150 उपन्यास और 300 लघु कथाएँ लिखी हैं।

**बांगला से अनुवाद: कविता मित्रा:** हैदराबाद के एक स्कूल में भौतिक विज्ञान पढ़ाती हैं। विज्ञान और गणित में रुचि हैं। अलग-अलग तरह की किताबें पढ़ने का शौक है। यह कहानी किताब *किशोर कर्नल समग्र*, प्रथम भाग, दे'ज़ पब्लिशिंग, कोलकाता (नवम्बर 2005) से साभार।

**सभी चित्र: हबीब अली:** रियाज़ एकेडमी, भोपाल से इलस्ट्रेशन का कोर्स किया है। ग्वालियर के गवर्मेंट इंस्टीट्यूट ऑफ़ फाइन आर्ट्स से फाइन आर्ट्स में स्नातक। रोज़मर्रा की ज़िन्दगी की फोटोग्राफी का शौक। एनसीईआरटी, रूम टू रीड, तूलिका बुक्स, डकबिल, इकतारा, एकलव्य जैसे प्रकाशकों के साथ काम कर रहे हैं।